# वैज्ञानिक बनेंगे स्पीलबर्ग!

**मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी में अनूठा प्रयोग हो रहा है- वैज्ञानिकों को फिल्मकार बनाने का। इससे संबंधित पाठ्यक्रम ने विद्यार्थियों में तेजी से पैठ बनाई है।**

जॉन ब्योर्थ

क्या वाम-दिमाग वाले वैज्ञानिकों को दक्षिण-दिमाग वाले फिल्म निर्माताओं द्वारा प्रशिक्षित किया जा सकता है? मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी के विज्ञान तथा प्राकृतिक इतिहास फिल्म निर्माण पाठ्यक्रम में इसका जवाब होने का दावा किया जा रहा है। अमेरिका के एकमात्र विज्ञान तथा प्राकृतिक इतिहास फिल्म स्कूल के लिए मोंटाना का चुनाव कुछ अजीब-सा लगता है क्योंकि पूर्वी अमेरिका के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की बेहतरीन वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं या न्यूयार्क और लॉस एंजिलीस के शानदार फिल्म स्कूलों से मोंटाना की पर्वतीय चोटियों और घास के हरे-भरे मैदानों की कोई समानता नहीं है। लेकिन थोड़े गौर से देखने पर इस खास स्कूल के मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी-बोजेमान में होने की तुक समझ में आ जाती है।

विश्वविद्यालय के मीडिया एवं थियेटर कला विभाग में विज्ञान तथा प्राकृतिक इतिहास फिल्म निर्माण पाठ्यक्रम को शुरू करने वाले और इसके निदेशक रोनाल्ड टोबियस कहते हैं, ''अगर आप आउटडोर लोकेशन का इस्तेमाल क्लासरूम की तरह करना चाहते हैं तो मोंटाना से बेहतर जगह कहां है?'' कनाडा की सीमा से लगा मोंटाना आज भी अमेरिका का सबसे ग्रामीण राज्य है जहां भैंसों के रेवड़ घूमते हैं और अमेरिका के हाइ-प्रोफाइल मूल निवासियों की अच्छी आबादी है। विभिन्न दिशाओं में बेतरतीब तरीके से फैला हुआ प्राचीन पश्चिमी नगर बोजेमान येलोस्टोन नेशनल पार्क से करीब 130 किलोमीटर उत्तर में है। ग्लेशियर नेशनल पार्क से दक्षिण-पूर्व में लगभग पांच घंटे की यात्रा के बाद भी यहां पहुंचा जा सकता है। ये दोनों पार्क विश्व के दो बेहतरीन जंगल और वन्यजीव केंद्र हैं। आकाश में उड़ते नाना प्रकार के पक्षियों और नीचे धरती पर अपने भोजन के लिए विचरण करते कई तरह के जीवों के साथ ही पार्क की सीमाओं के भीतर भैंसें, कई तरह के हिरण, चौसिंगें (एंटिलोप), पहाड़ी बकरियां और जंगली भेड़ें, भूरे और काले रीछ, पहाड़ी शेर और भेड़िए दिखाई देते हैं। यहां मौजूद वनस्पतियां और जीव-जंतु सिर्फ इसी तक सीमित नहीं हैं। इन दो पार्कों को जोड़ने वाली संपूर्ण उत्तरी रॉकी पर्वतमाला प्राकृतिक चमत्कारों से भरी पड़ी है। इसका अध्ययन और फिल्मांकन अभी होना है। अत: अपनी तरह के इस पहले फिल्म स्कूल के लिए लोकेशन का मुद्दा चिंता का विषय नहीं था। असली चिंता दूसरी थी। डिस्कवरी चैनल की प्रकृति से संबंधित फिल्मों के निर्देशक और निर्माता टोबियस कहते हैं, ''हमारे जहन में तो सिर्फ एक सवाल था कि क्या आप वास्तव में वैज्ञानिकों को फिल्म निर्माता बना सकते हैं?''

## दूरी पाटने की पहल

अगर किसी वैज्ञानिक फिल्म पर सुप्रसिद्ध समुद्र विज्ञानी जैकुअस कोस्तेयू की छाप है तो समझ लीजिए कि फिल्म खुद ही सब कुछ बोलती है। टोबियस के शब्दों में, ''उनमें कथा ऐसे चलती है जैसे कि ईश्वर बोल रहा हो।'' सिर्फ एक आवाज दर्शकों को बताती है कि वे क्या देख रहे हैं। मतलब यह कि ''जो है, यही है। चुपचाप देखिए क्योंकि ईश्वर खुद आपको तथ्यों की जानकारी दे रहे हैं।'' इसी परंपरा को निभाते हुए वैज्ञानिक किसी विषय को समझाने के लिए पहले फिल्म का सहारा लेते हैं और फिर फिल्म निर्माण के असली तरीके की उपेक्षा कर उसमें साक्ष्यों के लिए दृश्यों का सहारा लेते हैं। टोबियस कहते हैं, ''अगर आप कोई परंपरागत



मूल लेख *हाई इंटरनेशनल* पत्रिका में प्रकाशित

वैज्ञानिक फिल्म दिखाकर उसके बारे में सवाल पूछने लगें तो ज्यादातर दर्शक मुंह चुराएंगे। लेकिन हां, वे दो-तीन आइडिया जरूर दे देंगे। लेकिन समस्या यह है कि वैज्ञानिक फिल्म तथ्यों पर आधारित होती है, आइडिया पर नहीं।''

''इससे 'वाम और दक्षिण दिमाग की बहस' छिड़ गई है क्योंकि आमतौर पर यह माना जाता है कि वैज्ञानिक विचार का जन्म दिमाग के बाएं हिस्से में (स्वभाव में सतर्क और गणनात्मक) होता है जबकि फिल्म निर्माता दक्षिण दिमाग (सर्जनात्मक तथा कलात्मक) वाले होते हैं। इन दो अवधारणाओं के बीच सदा असहज संबंध बना रहता है। टोबियस के शब्दों में ''वैज्ञानिकों की आंखों पर ऐसी पट्टी चढ़ी रहती है कि उन्हें फिल्म निर्माण का बस एक ही रास्ता दिखाई देता है।'' वे फिल्म की जटिलता और उसके इस्तेमाल के तरीकों को नहीं समझते। दूसरी ओर जब से कैमरे का आविष्कार हुआ है, तभी से फिल्म निर्माता विज्ञान और प्राकृतिक इतिहास की उपेक्षा करते रहे हैं क्योंकि एक तो उनकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि नहीं होती, दूसरे उन्हें सही सवाल पूछना भी नहीं आता। इस कार्यक्रम में इन दोनों के बीच की दूरी पाटने के तरीके खोजे जा रहे हैं और इस समस्या का समाधान खोजा जा रहा है। मतलब यह कि वैज्ञानिकों को पकड़ो और उन्हें फिल्म निर्माता बनने का प्रशिक्षण दो।''

इस तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए कम से कम विज्ञान का कनिष्ठ स्तर का पाठ्यक्रम पूरा करना अनिवार्य है। लेकिन नामांकन सूची को देखकर पता लगता है कि 60 प्रतिशत विद्यार्थी इससे कहीं ज्यादा योग्यता प्राप्त हैं। कुल विद्यार्थियों में से 60 प्रतिशत के पास विज्ञान की स्नातक डिग्री और 40 प्रतिशत विज्ञान में स्नातक से भी ज्यादा शिक्षा हासिल किए होते हैं। एक विद्यार्थी ने तो डॉक्टरी की पढ़ाई भी की है। आवेदक हार्वर्ड, येल तथा प्रिंसटन के साथ ही प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्सस तथा यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन तक के होते हैं। पृष्ठभूमि की विविधता के लिए इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को भी लिया जाता है। एक विषय से दूसरे विषय की ओर ले जाने वाले इस पाठ्यक्रम के मद्देनजर इस कदम को टोबियस सकारात्मक मानते हैं।

अपनी जन्मभूमि भारत में मानवभक्षी तेंदुओं पर प्रवीण सिंह द्वारा बनाई गई विद्यार्थी-श्रेणी की फिल्म 'किलिंग फील्ड्स' एमी एवार्ड से सम्मानित हुई। इसके अलावा कोरिया, तंजानिया, इंग्लैंड, स्काटलैंड तथा आस्ट्रेलिया के विद्यार्थियों ने भी कार्यक्रम को अपने-अपने देश के अनुभवों से समृद्ध किया है।

## जीवन की छवि

ऐसा नहीं है कि ये सभी भावी फिल्म निर्माता मुश्किल विज्ञान से जुड़े विषयों में ही शिक्षित हों। सामाजिक विज्ञान जैसे विषय के छात्रों से भी इस पाठ्यक्रम के लिए आवेदन स्वीकार किए जाते हैं। बल्कि केली मथेसन जैसी वकील के लिए तो यह छूट वरदान ही साबित हुई है। अपने पूर्व अनुभवों के बारे में वह कहती हैं, ''मेरी पृष्ठभूमि तो जन रूचि/पर्यावरण कानून रही है, लेकिन मैंने मीडिया की ताकत को समझा और मेरी इच्छा हुई कि मैं पर्यावरण के बारे में अपनी बात कहने के लिए फिल्म का इस्तेमाल करूं।''

अपने मकसद को पूरा करने के लिए मथेसन को स्नातक डिग्री अर्जित करने का इंतजार नहीं करना पड़ा। वह पहले साल की क्लासरूम की पढ़ाई के बाद ही दूसरे साल फिल्म निर्माण के प्रायोगिक कार्य के लिए एक स्थानीय उत्सव 'प्ले ऑफ द लिटिल डेविल्स' का फिल्मांकन करने कोस्टा रिका चली गई। उसके लिए यह मात्र एक सांस्कृतिक नहीं बल्कि राजनीतिक अनुभव भी था। मथेसन कहती हैं, ''इस उत्सव में ब्रूगन आदिवासी बाहरी व्यक्तियों के साथ अपने संघर्ष का जश्न मनाते हैं। इसका संबंध अमेरिका पर विजय की प्राचीन घटना से है। यह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वे एक प्रस्तावित जलविद्युत बांध के निर्माण के खिलाफ लड़ रहे हैं जिससे उनकी अधिकांश सांस्कृतिक विरासत वाली भूमि नष्ट हो जाएगी।''

अभी से कुछ कहना जल्दबाजी होगी लेकिन लगता है कि उनकी फिल्म और उत्सव बांध के निर्माण में रूकावट डालने में सफल रहे हैं। वैसे इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए सफलता आश्चर्य का विषय नहीं है क्योंकि हाल के वर्षों में उनका काम सीबीएस तथा सीएनएन चैनलों के समाचारों, ''60 मिनट'', ''लैरी किंग लाइव'' और नेशनल ज्योग्राफिक तथा डिस्कवरी चैनलों में स्थान पा चुका है।

क्या सामाजिक या प्राकृतिक विज्ञान विषय के वैज्ञानिकों को इस कार्यक्रम से फिल्म निर्माता बनाया जा सकता है? टोबियस को इस सवाल का जवाब मिल गया है। उनका मानना है, ''वे बहुत अच्छे फिल्म निर्माता बनाए जा सकते हैं।'' □

**लेखक:** *जॉन ब्योर्थ बोजेमान (मोंटाना) में रहते हैं और प्रोफेशनल लेखक हैं। उनकी रचनाएं हुक्ड ऑन द आउटडोर्स, स्कीइंग तथा द ड्रेक* में प्रकाशित होती रहती हैं।

मोंटाना में फिल्म निर्माण तकनीक की पेचीदगियां सीखते मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स (फिल्ममेकिंग) के प्रथम वर्ष के छात्र ग्रेग श्नेदर (दाएं) और लिब्बे व्हाइट।

साभार: मोंटाना स्टेट यूनिवर्सिटी